श्रमृतवन्धु (स्र॰ → ब॰) m. Genosse der Unsterblichkeit (Gegens. मृत्यु-बन्ध): तं देवा स्रन्वंतायस भुद्रा स्रमृतंबन्धव: रू.V. 10,72, 5.

স্দ্নেশ্বন (র ু + ম ু) n. N. eines von einer Amrtaprabha erbauten Klosters Raga-Tar. 3, 9.

श्रमृतभुज् (श्र॰ + भुज्ञ) m. Gottheit H. 7.

श्रम्तमती (von श्रम्त) f. = श्रम्तगति Colebr. Misc. Ess. II, 139. Man hätte श्रम्तवती erwartet.

श्रम्तमँय (von श्रम्त) adj. f. ई. 1) unsterblich: यञ्चास्या पृथिव्या तेज्ञा-मया ऽमृतमयः (Çɨмɨк. = শ্বमर्णाधमा) पुरूषः Çat. Br. 14,8,5,1. = Br. Ar. Up. 2, 5, 1. — 2) Ambrosia-artig: यः सदैवामृतप्रायाणीदृशानि फला-नि भत्तयति। तस्य ॡद्यममृतमयम् Рамкат. 206, 7. फलम् 263,23. 208,18. विषम् Виактя. 1, 76. ein Mädchen 74.

श्रमृतर्स (श्र° + र्स) 1) m. Göttertrank, Ambrosia: काव्यामृतर्सास्वा-द: Hir. I,145. विविधकाव्यामृतर्सान् Внакта. 3,77. — 2) f. °सा dunkle Weintraube (कपिलदाद्या) Råéan. im ÇKDa.

श्रम्तलता (श्र॰ + ल॰) f. eine Ambrosia- (Lebenskraft-) spendende Schlingpflanze: सैवाम्तलता रुक्ता (zugeneigt) विरुक्ता (abgeneigt) विषव-হার্ম Внакта. 1, 75.

त्रमृतलितका (म्र॰ + ल॰) f. dass. ॰के voc., Anrede an eine Schöne Çaur. (Ba.) 35.

श्रमृतवपुस् (श्र॰ → व॰) m. ein Bein. Çiva's Çıv.

अमृतवहर्ती (知° + व°) f. Cocculus cordifolius DC., eine schr gemeine Schlingpflanze. Benannt entweder nach den heilenden Eigenschaften, oder als eine nie aussterbende Pflanze (vgl. 되다 3,d). RATNAM. im ÇKDa. — Vgl. 되다 3,b, γ.

স্নূনবাঁকা (ম্ব - বা) f. ein bes. Vogel ÇAT. Br. 10,5,2,10.

শ্বদ্নবিন্দ্র पনিঅর্ (শ্র° - বিন্ত্র + ডप°) f. N. einer Upanishad Co-LEBR. Misc. Ess. I, 95. Ind. St. 1,249.252.302. 2,1.59.394. Weber, Lit. 158. Verz. d. B. H. No. 357.

ऋमृतसंभवा (von ञ्र° + संभव) f. = ऋमृतवङ्खी Rǻсых. im ÇКDв.

त्रमृतसार् (त्र॰ + सार्) m. Ambrosia-Essenz, ist wohl die Sanskrit-Form für die Stadt Amritsir. LIA. 1,98. 99.

श्रमृतसार्व (श्र° + ब) m. Melasse: गुड: ॥ तवराबोद्भवखएड: ॥ Rågan. im ÇKDn.

ਬਸ਼ਨਜ਼੍ਰ (ਸ਼° + ਜ਼੍ਰ) m. Mond H. 104; vgl. ਸ਼ਸ਼ਨ 4, d. am Ende.

अमृतसीद्र (स्र॰ → सी॰) (der leibliche Bruder der Ambrosia) m. Pferd Rigin. im ÇKDa. Das Pferd उद्धे:स्रवस् entstand wie die Ambrosia bei der Quirlung des Oceans.

श्रमृतस्रवा (von श्र $^{\circ}$ + स्रव) f. N. einer Pflanze, = हृद्त्ती, वृत्ताहरूा, उपविद्याला, घनवछ्ती, मितलता, Råéan. im ÇKDR.

স্নানার (স° + সানার) m. N. pr. eines Mannes Rića-Tar. 5, 422. 6, 219.

श्रम्तात्तर (श्र॰ + श्रत्तर्) adj. unsterblich und unvergänglich: त्रं प्र-धानममृतात्तरं क्रः Çveriçv. Up. 1,10.

श्रमृतानन्द् (র॰ + স্থানন্द्) m. ein Mannsname Verz. d. B. H. No. 1335. Burn. Intr. 630.

ষ্মন্নান্যম্ (র ° + শ্বন্থম্) m. Gottheit AV. 1,1,1,3. H. 88, Sch. ষ্মন্নাদলে n. = শ্বন্দলে 1, a. Dravjābbidhāva im ÇKDr. श्रमृताय् (von श्रमृत), श्रमृतायते der Ambrosia gleichen: उत्तिष्ठ वत्से-त्यमृतायमानं वचा निशम्य Ragh. 2, 61.

স্বদ্নাহান (য়॰ → স্বহান) m. Gottheit Halâj. im ÇKDa.

র্মন্নার্থন (von শ্ব॰ + শ্বন্নন্) m. P. 5, 4, 94, Sch. Vop. 6, 45.

श्रम्तासङ्ग (श्र॰ + श्रा॰) n. Collyrium aus Amomum Xanthorrhiza H. 1053. — Vgl. श्रम्तात्पन्न.

म्रमृँतामु (म्र॰ + म्रमु) adj. eine unsterbliche Seele habend AV. 5,1,1.7. मृम्ताक्रण (म्र॰ + म्रा॰) m. Ambrosia-Dieb, ein Bein. Garu da's Hân.10. मृम्ताक्रण (म्र॰ + म्राव्हा) n. eine bes. Frucht: लघुवित्वपलाकृति खारामानदेशननामपाती नाम फलम्। तत्पर्यायः। रुचिपलम्। म्रम्य गुणाः। गुरुवम्। वातनाशिवम्। स्वाड्वम्। म्रम्बस्। रुचिप्रुक्तकारितं च। तल्खपुफलगुणाः। वृष्यवम्। मुस्वाड्वम्। त्रिदेषनाशितं च। तत् मुदलदेशे वङ्गं लभ्यते। इति भावप्रकाशः। ÇKDn.

श्रम्तेश (श्र॰ + ईছা) m. ein Bein. Çiva's Çıv. श्रम्तेशादिलिङ्गप्राडर्भाव heisst der 94ste Adhjája im Skandapuráņa Verz. d. B. H. No. 491.

म्रमृतिशय (म्रमृते, loc. von म्रमृत - शय) m. ein Bein. Vishņu's, s. u. म्रमृत 4, h.

अमृतेश्वर् (अ॰ + ईश्वर्) m. = अमृतेश Rida-Tar. 3, 463.

म्रम्तिष्टकाँ (म॰ ४, ६. + इष्टका) f. Bezeichnung einer Art Backsteine in der Form von goldenen Thierköpfen: (पमुशीर्षाणि) क्रिएमपान्यु कैके कुर्वति म्रम्तिष्टका इति वद्तस्ता कृ ता म्रम्तिष्टका न कि तानि पमुशीर्षाणि (२.४. Ba. 6,2,4,38. 11,1,2,43.

มमृतोत्पन (भ्र॰ + उत्पन्न) 1) f. ्ना Fliege Rasan. im ÇKDa. — 2) n. eine Art Collyrium (व्यर्गित्त्य) ebend. Vgl. प्रमृतोद्भव und स्रमृतासङ्गः

ঘন্নাবেন (মৃ০ + মানেন mit unreg. Krasis) m. N. pr. Sohn Simhahanu's Schiefner, Lebensb. 233 (3). 264 (34). LIA. II, Anh. II. Lalit. 193, N. 389, N.

म्रमृतोद्भव (प्र°+उद्भव) n. = म्रमृतोत्पन्न 2. Rićan. im ÇKDa.

1. ब्रम्त्यु (3. म्र + मृ॰) m. Nicht-Tod, Nicht-Todtschlag: म्रमृत्युर्क् वा मन्यो ब्रह्मकृत्यापै मृत्युरेष क् वे सातान्मृत्युर्षद्वस्कृत्या ÇAT. Ba. 13,3,6,3.

2. त्रमृत्यु (wie eben) adj. ohne Tod, unsterblich: स्रद्रेप: RV.10,94,11. स्रवं: 6,48,12. उशिजी: 3,2,9.

मुँग्ध (3. म्म म् $^{\circ}$) adj. f. म्मा. 1) unablässig, unermüdlich: मिह्रा न-पात्ममृधम् (प्रच्यावयिता) हुए. 1,37,11. (इन्द्रः) मृभूधो वार्जसातये 8,69,2. (इषः) गोभिर्यतेमाना म्रमूधाः 3,58,8. तस्मा म्रमूधाः उषसो व्युच्हान् 5,37,1. 43,2.13. 6,22,10. 75,9. — 2) angespannt: मर्दः हुए. 6,19,7. धियं मे प्रमूधा सातये कृतं वसूयुम् 7,67,5. — $^{\circ}$ एष्टाः म्रमर्धन्.

শ্বদূষা (3. শ্ব + দূষা) adv. gewiss, richtig: पद्या वृत्ती वनस्पतिस्तवैव पुरुषा ওদ্যা сেম. Ba. 14,6,9,30. = Br. År. Up. 3,9,28.

म्रमेद्स्क (von 3. म्र + मेद्स्) adj. ohne Fett: मासम् Sugn. 2,64,5. म्रमेधेस् (3. म्र + मे॰) adj. P. 5,4,122. Vor. 6,27. dumm, einfältig I. 352.

श्रमेध्येँ (3. श्र + मे॰) 1) adj. nicht opferfähig oder -würdig, unrein, unheilig, nefastus: श्रमेध्यो वे पुरुषा यदनृतं वदति ÇAT. BR. 1,1,1,1. 8,12. 3,1,2,10. श्रस्ति वे पत्या श्रमेध्यं यदवाचीनं नाभेः 1,3,1,13. 3,1,2,2.19. 5,2,1,8. त एत उत्क्रास्तमेधा श्रमेध्या श्रपश्चिपाः 7,5,2,37. यास्त्रम् — श्रमेध्याद्यि काञ्चनम् Gold lässt sich auch aus etwas Unreinem gewinnen M.2,239 (vgl. Kan.16). नामेध्यं प्रक्तिपेद्यी 4,53. श्रमेध्यलिप्त 56. श्रमेध्य-